कैदी और कोकिला

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» माखनलाल चतुर्वेदी का परिचय व काव्य-स्वभाव

प्रश्न 1 (आसान). माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म कहाँ और कब हुआ?
उत्तर – मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई गाँव में, सन् 1889 में।

प्रश्न 2 (आसान). 16 वर्ष की उम्र में वे क्या बने?
उत्तर – वे शिक्षक बने।

प्रश्न 3 (मध्यम). माखनलाल चतुर्वेदी किस तरह के काम/क्षेत्र से जुड़े थे–सिर्फ कवि या और भी?
उत्तर – वे देशभक्त कवि के साथ-साथ प्रखर पत्राकार और कवि-कार्यकर्ता थे; उन्होंने प्रभा पत्रिका तथा 'कर्मवीर', 'प्रताप' का भी संपादन किया।

प्रश्न 4 (कठिन). उनके काव्य-स्वभाव में राष्ट्रीय भावना क्यों दिखाई देती है? एक कारण लिखो।
उत्तर – क्योंकि वे स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय थे और कई बार जेल गए थे–उनका अनुभव और संघर्ष उनकी रचनाओं में स्वतंत्रता की चेतना, त्याग और बलिदान की भावना बनकर आया।

» कविता में भाव की प्रधानता और शब्द-शिल्प का प्रयोग

प्रश्न 5 (आसान). चतुर्वेदी जी कविता में शिल्प को किस तरह रखते हैं–मुख्य या सहारा?
उत्तर – वे शिल्प को सहारा की तरह रखते हैं, मुख्य भाव-संचार है।

प्रश्न 6 (आसान). "कोकिल बोलो तो!" में 'तो' से क्या प्रभाव बढ़ता है?
उत्तर – आवाज़ में जोर और बेचैनी/दबाव का भाव बढ़ता है।

प्रश्न 7 (मध्यम). "संदेशा किसका है?" इस सवाल का भाव से क्या संबंध बनता है?
उत्तर – कवि को संदेह है कि कोकिला का संदेश किसके हित में है; इससे असंतोष/आक्रोश का भाव उभरता है।

प्रश्न 8 (कठिन). भाव की प्रधानता और शब्द-शिल्प–दोनों में अंतर एक उदाहरण के आधार पर लिखो।
उत्तर – भाव प्रधान है क्योंकि कवि प्रश्नों और पुकार से बेचैनी/आक्रोश व्यक्त करता है (जैसे "क्या गाती हो?")। शब्द-शिल्प भाव को तेज करता है–जैसे "तो!" में जोर आकर कवि की तीव्रता बढ़ जाती है; छंद/ढांचा सिर्फ असर के लिए मदद करता है, केंद्र भाव ही है।

» 'वैफदी और कोकिला' में जेल-दमन की छवि

प्रश्न 9 (आसान). "उफँची काली दीवारों वेफ घेरे में" में कवि कैद को किस तरह दिखा रहा है?
उत्तर – काली ऊँची दीवारों के घेराव से, यानी बंदी को चारों तरफ से जकड़ कर।

प्रश्न 10 (आसान). "दिन-रात कड़ा पहरा है" का भाव क्या बनता है?
उत्तर – लगातार निगरानी और कोई राहत/सुकून न होने का डर।

प्रश्न 11 (मध्यम). कविता में "ब्रिटिश-राज का गहना" कहकर कवि दमन को कैसे समझाता है?
उत्तर – हथकड़ियाँ/जकड़ को 'गहना' कहकर उसे तिरस्कार भरी तुलना में प्रस्तुत करता है–यानी ब्रिटिश शासन दमन को सम्मान/शोभा की तरह पेश कर रहा है।

प्रश्न 12 (मध्यम). बार-बार "कोकिल बोलो तो!" जेल-दमन की छवि में क्या जोड़ता है?
उत्तर – यह सिर्फ कोकिल को बुलाना नहीं; दमन के बीच कैदी की उम्मीद, उदासी और प्रतिरोध की आवाज़ को उभारता है।

प्रश्न 13 (कठिन). कविता में 'काली' शब्द की आवृत्ति से छवि कैसे तीखी होती है? 3-लाइन में तर्क लिखिए।
उत्तर – 'काली' दीवारों, रात, संकट-सागर और जेल तक फैलती है–जैसे अँधेरा हर जगह छा गया हो। इससे दमन का भाव स्थायी और घना लगता है। 'कोकिल बोलो तो!' के साथ 'काली' की तीव्रता उम्मीद/विद्रोह को भी और ज्यादा चमकाती है।

» कोकिल/कोयल का प्रतीकात्मक अर्थ–मुक्ति का संदेश

प्रश्न 14 (आसान). इस कविता में कोकिल का 'प्रतीकात्मक' अर्थ क्या है?
उत्तर – कोकिल असल पक्षी नहीं, मुक्ति/प्रतिरोध का संदेश देने वाली चेतना का प्रतीक है।

प्रश्न 15 (आसान). 'कोकिल बोलो तो!' कवि किस तरह की आवाज़ चाहता है?
उत्तर – मधुरता वाली खामोशी नहीं, दमन के खिलाफ़ मुक्ति का संदेश देने वाली आवाज़।

प्रश्न 16 (मध्यम). 'रात्रि को चीखी' पंक्ति का प्रतीकात्मक मतलब क्या होगा?
उत्तर – जब दमन बहुत गहरा हो, तब चेतना दबती नहीं–चीख/आक्रोश बनकर मुक्ति की ओर जगाने लगती है।

प्रश्न 17 (कठिन). जेल-दमन की 'काली दीवारें' और कोकिल के 'बोलने/ना बोलने' में संबंध कैसे बनता है?
उत्तर – काली दीवारें दमन का माहौल दिखाती हैं; उस माहौल में कोकिल का बोलना दमन के खिलाफ आशा/विद्रोह का संकेत बनता है, और कोकिल का न बोलना उस दमन की खामोशी का हिस्सा जैसा लगता है–इसलिए 'मुक्ति का गीत' माँगा गया है।

» ब्रिटिश शासन की क्रूरता बनाम कैदी की विद्रोही करुणा

प्रश्न 18 (आसान). "काली" शब्द का बार-बार आना किस भाव को मजबूत करता है?
उत्तर – ब्रिटिश शासन के दमन और जेल की काली/भयावह स्थिति को।

प्रश्न 19 (आसान). "चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज" का मतलब क्या है?
उत्तर – भीतर से उगता, चुप लेकिन दृढ़ प्रतिरोध–जो दुख में भी टूटता नहीं।

प्रश्न 20 (मध्यम). कविता में "तेरी-मेरी" विषमता कैसे क्रूरता और करुणा दोनों दिखाती है?
उत्तर – कविल को हरियाली मिलती है और कैदी को कोठरी; यह तुलना अन्याय की करुणा भी बनती है और प्रतिरोध की वजह भी।

प्रश्न 21 (मध्यम). "रोना भी है मुझे गुनाह" पंक्ति से शासन की क्रूरता कैसे समझ आती है?
उत्तर – शासन भावनाओं तक को दबाता है; मन का दर्द दिखाना भी अपराध बना दिया गया है।

प्रश्न 22 (कठिन). ब्रिटिश शासन की क्रूरता के "ब्योरा" और कैदी के "विद्रोह-बीज" को एक साथ जोड़कर बताइए कि कवि क्या हासिल कराना चाहता है?
उत्तर – कवि अत्याचार का ठोस अनुभव दिखाकर चेतना जगाता है, और उसी अनुभव में "मधुर" यानी गीत/उम्मीद के जरिए अंदर से विद्रोह का रास्ता देता है–दुख निष्क्रिय नहीं रहता, प्रतिरोध बनता है।

» 'काली' शब्द का आवर्त व चमत्कारिक प्रभाव (काव्य-भाषा)

प्रश्न 23 (आसान). आवर्त का मतलब क्या होता है?
उत्तर – कविता में किसी शब्द का लौट-लौटकर आना।

प्रश्न 24 (आसान). यहाँ 'काली' शब्द का मुख्य काम क्या है–सिर्फ रंग बताना या भाव बताना?
उत्तर – सिर्फ रंग नहीं–जेल के अंधकार, यातना और विषमता का भाव गहरा करना।

प्रश्न 25 (मध्यम). कविता में 'काली' शब्द की वापसी दमन के चित्रण को कैसे तीखा बनाती है?

उत्तर – हर बार "काली" आने पर अंधकार और दबाव दोहराते हुए गहराते हैं, इसलिए दमन का एहसास सिर्फ बताया नहीं बल्कि महसूस होने लगता है।

प्रश्न 26 (कठिन). 'तेरा नभ-भर में संचार / मेरा दस पुफट का संसार!' के साथ 'काली' शब्द को जोड़कर समझाइए कि विषमता कैसे बनती है।

उत्तर – पहली पंक्ति संचार और संसार की दूरी बताती है, और 'काली' उस छोटे संसार को अंधकार से भरकर मानसिक यातना बढ़ाती है। इस तरह हरियाली/नभ की तुलना बनाम 'काली' कोठरी की तुलना होकर विषमता और गहरी दिखती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. माखनलाल चतुर्वेदी के परिचय से लिखो कि उनके जीवन से उनके काव्य-स्वभाव (कविता का स्वभाव) तक कैसे संबंध बनता है।

› उनका जन्म-काल और शुरुआती काम बताओ (1889; 16 वर्ष में शिक्षक)।
› उनका कार्यक्षेत्र बताओ (अध्यापन छोड़कर 'प्रभा' पत्रिका का संपादन; अन्य पत्रिकाएँ)।
› उनका सम्मान बताओ (पद्मभूषण, साहित्य अकादमी)।
› अब काव्य-स्वभाव जोड़ो: रचनाओं में राष्ट्रीय भावना, स्वतंत्रता की चेतना, त्याग-बलिदान।
› कारण को जीवन से जोड़ो: कवि-कार्यकर्ता थे और आंदोलन में कई बार जेल गए–इसी अनुभव का असर कविताओं में दिखता है।

उत्तर – माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 1889 में हुआ और वे 16 वर्ष की उम्र में शिक्षक बने। बाद में उन्होंने अध्यापन छोड़कर 'प्रभा' पत्रिका सहित 'कर्मवीर' और 'प्रताप' का संपादन किया। उनके योगदान के लिए उन्हें पद्मभूषण और साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय भावना, स्वतंत्रता की चेतना तथा देश के लिए त्याग और बलिदान की भावना मिलती है। क्योंकि वे कवि-कार्यकर्ता थे और स्वाधीनता आंदोलन के दौरान कई बार जेल गए थे, इसलिए उनकी कविताओं का भाव उनके अपने अनुभव और संघर्ष से सीधे जुड़ा हुआ है।

उदाहरण 2. कविता की पंक्तियाँ–"क्या गाती हो? क्यों रह-रह जाती हो? कोकिल बोलो तो!"–इनमें भाव की प्रधानता कैसे दिखती है? और शब्द-शिल्प का काम क्या है?

› देखो इन पंक्तियों में कवि ने कोकिला को सवालों और पुकार से घेरे में लिया है–यह भाव (बेचैनी, असंतोष, आक्रोश) को आगे लाता है।
› "तो!" जैसे शब्द में जोर आता है–यानी शब्द-चयन भाव की तीव्रता बढ़ाता है।
› छंद/परंपरागत ढांचा होने पर भी कविता का केंद्र 'क्या/क्यों/किसका' जैसे प्रश्नों की बेचैनी है–यानी भाव प्रधान है।
› इसलिए शिल्प सहारा है: गति और प्रभाव के जरिए भाव-संचार मजबूत होता है।

उत्तर – इन पंक्तियों में भाव की प्रधानता इसलिए है क्योंकि कवि कोकिला से बहस नहीं करता, बल्कि सवालों और पुकार के जरिए जेल-आक्रोश और बेचैनी तुरंत व्यक्त करता है ("क्या गाती हो?", "क्यों…?", "बोलो तो!")। शब्द-शिल्प का काम 'तो!' जैसे जोरदार शब्दों और ढांचे से भाव का असर बढ़ाना है; कविता का असली केंद्र भाव-संचार है, सिर्फ छंद नहीं।

उदाहरण 3. कविता की पंक्तियों के आधार पर लिखिए कि "जीने को देते नहीं पेट-भर खाना, मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना!" में जेल-दमन की कौन-कौन सी क्रूर बातें सामने आती हैं।

› पंक्ति में पहली क्रिया ढूँढो: 'पेट-भर खाना नहीं'–यानी जीवन की बुनियादी जरूरत भी छीन ली गई
› दूसरी क्रिया पढ़ो: 'मरने भी देते नहीं'–यानी मौत का रास्ता भी बंद, इंसान को निकाल ही नहीं रहे
› तीसरी बात पकड़ो: 'तड़प रह जाना'–यानी दोनों के बीच लगातार पीड़ा, राहत नहीं
› निष्कर्ष लिखो: यह दमन सिर्फ सज़ा नहीं, लम्बी यातना और नियंत्रण की व्यवस्था है

उत्तर – इस पंक्ति में दमन की तीन क्रूर बातें दिखती हैं–(1) पेट-भर खाना न देना, यानी जीवन की जरूरत छीनना; (2) मरने तक न देना, यानी मौत का रास्ता बंद रखना; और (3) 'तड़प रह जाना', यानी लगातार पीड़ा के साथ लंबा नियंत्रण। इसलिए यह जेल-दमन केवल दंड नहीं बल्कि व्यवस्थित यातना की तस्वीर है।

उदाहरण 4. कविता में बार-बार 'कोकिल बोलो तो!' और 'रात्रि को चीखी'–इन पंक्तियों का प्रतीकात्मक अर्थ बताइए।

› पहले पहचानो: कोकिल यहाँ असल पक्षी नहीं, प्रतीक है।

› देखो कवि क्या मांग रहा है: सामान्य मधुरता नहीं, 'मुक्ति का गीत' चाहिए।

› फिर समझो 'बोलो तो!' क्यों: दमन के माहौल में खामोशी भी समर्थन जैसी लगती है, इसलिए विरोधी स्वर चाहिए।

› अब 'रात्रि को चीखी' का अर्थ: रात का दमन इतना गहरा है कि चेतना चीख बन जाती है–आशा/आक्रोश जाग उठता है।

› अंत में निष्कर्ष: कोकिल का बोलना/चीखना कैदी की मुक्ति-चेतना और प्रतिरोध का संकेत है।

उत्तर – इस कविता में 'कोकिल/कोयल' का प्रतीकात्मक अर्थ है–दमन की रात में मुक्ति का संदेश देना। 'कोकिल बोलो तो!' का मतलब है कि अब मधुर गीत नहीं, प्रतिरोध और आज़ादी की चेतना वाला स्वर चाहिए; और 'रात्रि को चीखी' बताती है कि जंजीरें देखकर चेतना चीख/आक्रोश बनकर बाहर आती है।

उदाहरण 5. कविता में ब्रिटिश शासन की क्रूरता और कैदी की विद्रोही करुणा को "काली" और "चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज" के संकेतों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

› ब्रिटिश शासन के लिए कवि के "काली" प्रयोगों को अलग-अलग अर्थ में समझो: रात का अंधेरा + शासन की चालें + जंजीरों/पहरे की कड़वाहट।

› उदाहरण लो: "मेरी लौह- शृंखला काली" और "पहरे की हुंकृति..." से दमन का ठोस रूप दिखता है।

› अब कैदी की तरफ जाओ: "चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज" बताता है कि प्रतिरोध अंदर से, कोमल लेकिन दृढ़ है।

› कैदी की करुणा समझो: "तुझे मिली हरियाली..." और "मुझे नसीब कोठरी काली!"–यह दुख की तुलना है।

› विद्रोह जोड़ो: "कोकिल बोलो तो!" के जरिए उम्मीद/गीत प्रतिरोध का साधन बनता है; रोना भी गुनाह जैसा नियम बताता है कि शासन भावनाएँ भी दबाता है।

उत्तर – कविता में "काली" शब्द बार-बार देकर ब्रिटिश शासन की क्रूरता को जेल के अंधेरे, लौह-शृंखला और पहरे की भयावह आवाज़ जैसे ठोस रूपों में दिखाया गया है। इसके ठीक साथ कैदी "चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज" कहकर बताता है कि वह दुख के बीच भी भीतर से प्रतिरोध की जड़ें बोता है। उसकी विद्रोही करुणा यह है कि वह कोकिल की हरियाली देखकर अपने साथ हो रहे अन्याय की तुलना करता है और "कोकिल बोलो तो!" के गीत को उम्मीद व प्रतिरोध की ताकत बनाता है।

उदाहरण 6. कविता की पंक्ति "मुझे नसीब कोठरी काली!" में 'काली' शब्द के आवर्तन (बार-बार आने) का चमत्कारिक प्रभाव समझाइए।

› पहले अर्थ देखो: "नसीब कोठरी" यानी कवि की बंद/सीमित जगह और "काली" यानी उस जगह का अंधकार।

› अब आवर्त समझो: जब कवि "काली" को बार-बार दोहराता है, तो अंधेरा सिर्फ बताया नहीं जाता–लौट-लौटकर अनुभव जैसा लगता है।

› फिर प्रभाव जोड़ो: इससे दमन की यातना और विषमता की गहराई बढ़ जाती है–हर वापसी पर दबाव मजबूत होता है।

› अंत में काव्य-भाषा का नतीजा लिखो: "काली" पूरे भाव-क्षेत्र को रंग देती है, इसलिए तुलना (हरियाली बनाम अंधेरा) ज्यादा तीखी हो जाती है।

उत्तर – "मुझे नसीब कोठरी काली!" में 'काली' शब्द अंधकार को संकेत करके कवि की बंद और दबी हुई स्थिति को गहराई देता है। और जब यह शब्द कविता में लौटता (आवर्त) है, तो वही भाव-क्षेत्र बार-बार दबता है–दमन की यातना व विषमता ज्यादा चुभती महसूस होती है; यानी शब्द अर्थ से आगे जाकर मूड और तीखापन तय करता है–यही चमत्कारिक प्रभाव है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- परीक्षा में 'कवि-कार्यकर्ता + राष्ट्रीय भावना + त्याग-बलिदान' तीन बिंदु जरूर लिखना।
- उत्तर लिखते समय "भाव प्रधान" के साथ "उचित शब्द/सवालों से प्रभाव" जरूर जोड़ो।
- बिंब (काली दीवारें/पहरे/हथकड़ियाँ) और 'ब्रिटिश-राज' संकेत–दोनों साथ लिखो।
- बोर्ड में 'प्रतीकात्मक अर्थ' लिखते समय 1-लाइन निष्कर्ष + 1-उदाहरण ज़रूर लिखना।
- पंक्ति-आधार पर लिखो: "काली" से दमन, "चुपचाप, मधुर..." से भीतर का प्रतिरोध।

• उत्तर में 'आवर्त' लिखकर 'प्रभाव' (यातना, विषमता, मूड) जरूर जोड़ो।

एक नज़र में रिवीज़न

› 16 शिक्षक प्रभा संपादन राष्ट्रीय-भावना, जेल का अनुभव
› - भाव-संचार पहले; शिल्प सहारा; उचित शब्द असर बढ़ाते हैं।
› काली बिंब + पहरा + ब्रिटिश अकड़ = जेल-दमन की छवि
› - कोकिल = मुक्ति का संदेश; बोलना/चीखना = प्रतिरोध
› - काली = शासन का दमन, मधुर विद्रोह-बीज = अंदर का प्रतिरोध
› 'काली' का आवर्त = अंधकार/दमन का असर गहरा